२६. तीसरी से चौथी में जाते हुए

बताओ तो

- बड़ा होने पर तुम क्या बनना चाहते हो ?

समय का बोध नामक प्रकरण में तुमने एक चित्र बनाया था कि अगले बीस वर्षों के बाद तुम कैसे दिखाई दोगे । वह एक काल्पनिक चित्र था क्योंकि कोई भी निश्चित रूप में यह नहीं बता सकता कि तब तुम कैसे दिखोगे परंतु बड़ा होकर तुम्हें क्या बनना है ? तुम्हें क्या कर दिखाना है ? यह तुम निर्धारित कर सकते हो परंतु उसके लिए तुम्हें खूब पढ़ना चाहिए । परिश्रम करना चाहिए ।

पढ़ने का अर्थ केवल पाठशाला में जाकर पढ़ाई करना नहीं है । हम पाठशाला में तो पढ़ते ही हैं परंतु घर पर भी अपने बड़े तथा वरिष्ठ लोगों से भी बहुत-कुछ सीखते रहते हैं । हम अपने परिसर से भी सीखते हैं । इसीलिए हम परिसर का अध्ययन करते हैं ।

परिसर के प्रति आस्था

हमारा परिसर केवल हमारा नहीं है । वह अन्य लोगों का भी अर्थात सभी का है । परिसर द्‌वारा ही सभी लोगों की आवश्यकताओं की पूर्ति होती है । सबसे पहले हमें अपना, स्वयं का, अपने परिवार का और विद्‌यालय का ध्यान रखना चाहिए । ऐसा करने पर परिसर अपने-आप सुंदर बनेगा ।

परिसर द्‌वारा हमें जो वस्तुएँ मिलती हैं; हमें उनका सही उपयोग करना चाहिए । तात्पर्य यह है कि हमें भोजन तथा पानी इत्यादि का अपव्यय नहीं करना चाहिए ।

थोड़ा सोचो

- यदि हम सार्वजनिक बाग के फूल तोड़ें, तो क्या होगा ?
- यदि हम घर का कूड़ा-कचरा सड़क पर फेंक दें, तो क्या होगा ?
- ऐतिहासिक वास्तुओं की दीवारों पर हमें अपना नाम क्यों नहीं उकेरना चाहिए ?
- प्लास्टिक की थैलियाँ और बोतलें हमें यहाँ-वहाँ क्यों नहीं फेंकनी चाहिए ?

बताओ तो

- तुम्हारे परिसर में तुम्हें क्या अच्छा लगता है और क्यों ?

हमारा घर

क्या तुमने देखा है कि पक्षी घोंसले कैसे बनाते हैं ? अपने बच्चों के लिए उन्हें कितना परिश्रम करना पड़ता है ? तुम्हारे घर के लोग भी तुम्हारे लिए परिश्रम करते हैं । इसलिए तुम्हें भी उनके साथ प्रेमपूर्वक व्यवहार करना चाहिए । परिवार में जो बड़े-बूढ़े हों, उनका आदर-सम्मान करना चाहिए ।

हमें अपने पिता जी, माता जी और घर के अन्य सदस्यों के काम के बोझ को कम करने के लिए अपनी ओर से प्रयास करना चाहिए । केवल अपने घर की ही नहीं अपितु सभी महिलाओं का हमें सम्मान करना चाहिए ।

थोड़ा सोचो

- माता-पिता तुम्हें सबके साथ अच्छा व्यवहार करने के लिए क्यों कहते हैं ?
- माता-पिता ने खाना खाया या नहीं, क्या तुम कभी उनसे यह पूछते हो ?
- अपने घर के बड़े लोगों की तुम किस प्रकार सहायता करोगे ?
- यदि घर का कोई सदस्य बीमार पड़ जाए, तो तुम क्या करते हो ?

याद करो

'एक-दूसरे पर निर्भर होना', इसका क्या अर्थ है ?

परिसर के घटक

वनस्पतियाँ, प्राणी, पक्षी ये सब परिसर के घटक हैं । हम स्वयं भी परिसर का एक भाग हैं । परिसर के सभी लोगों का जीवन आनंदमय और सुचारु रूप से चलना चाहिए । सब लोगों को सुरक्षित होने का अनुभव होना चाहिए । हम क्या करते हैं, हमारा व्यवहार कैसा है; इसका परिसर पर प्रभाव पड़ता है ।

करके देखो

अपनी अँगुलियों में स्याही लगाकर कागज पर उनकी छाप लो । तुम्हारी और अन्य बच्चों की अँगुलियों की छापें क्या अलग-अलग (भिन्न) दिखाई दे रही हैं ?

एक ही वृक्ष की किन्हीं दो पत्तियों को देखो । उनमें क्या अंतर दीखता है ?

परस्पर व्यवहार

एक ही वृक्ष की सभी पत्तियाँ एक समान नहीं होतीं, कुछ छोटी तो कुछ बड़ी होती हैं । कुछ पत्तियों का रंग थोड़ा-सा अलग भी होता है । सभी फूल भी एक समान नहीं होते । मनुष्य के संदर्भ में भी ऐसी ही बात है । हमारा चेहरा अन्य लोगों के चेहरों से बिलकुल भिन्न होता है । अपनी अँगुलियों की छाप विश्व के अन्य किसी भी व्यक्ति की अँगुलियों की छाप जैसी कभी नहीं हो सकती। प्रत्येक व्यक्ति की कोई न कोई विशेषता होती है । अत: हम दूसरे लोगों को अपने से कम या हीन न मानें ।

यदि कोई व्यक्ति हमारी सहायता करता है तो हमें अच्छा लगता है । हमें भी यथासंभव दूसरों की सहायता करनी चाहिए ।

क्या तुम जानते हो

भारत १५ अगस्त १९४७ के दिन स्वतंत्र हुआ ।

स्वतंत्रता

प्रतिवर्ष १५ अगस्त के दिन हम अपना स्वतंत्रता दिवस मनाते हैं । हमारा देश स्वतंत्र है, इसपर हमें गर्व होना चाहिए । हमें विचार करने की स्वतंत्रता है । बड़ा होकर हमें क्या पढ़ना है, हम यह निश्चित कर सकते हैं । हम अपने व्यवसाय का चयन कर सकते हैं । हमारे देश के सभी नागरिकों को समान अधिकार प्राप्त हैं । प्रकृति को देखो । प्रकृति में सब कुछ नियमानुसार घटित होता है । चींटियाँ व्यवस्थित ढंग से एक कतार में ही चलती हुई दिखाई देती हैं । मधुमक्खियाँ अपने-अपने काम करती हैं।

हमें स्वतंत्र भारत का एक अच्छा नागरिक बनना चाहिए । उसके लिए हममें निष्ठा, समयशीलता, अध्यवसाय तथा अनुशासन होना चाहिए । बचपन में पड़ने वाली अच्छी आदतें बड़े होने पर हमारे काम आती हैं ।

थोड़ा सोचो

भीड़-भाड़वाले स्थान पर कतार में खड़े होकर काम करने पर कौन-से लाभ होते हैं ?

परिसर का अध्ययन करने पर हमें बहुत-कुछ सीखने को मिलता है । चौथी कक्षा में तुम कुछ और बातें सीखने वाले हो ।

***

HT6303